@2026 International Council for Education Research and Training 2026, Vol. 05, Issue 03, 39-48
ISSN: 2959-1376 DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7943

रक्षा के क्षेत्र में आयात से निर्यात तक जाता भारत: आत्मनिर्भर भारत पहल का विश्लेषणात्मक अध्ययन (2014–2025)

रिंकू

सहायक प्राध्यापक, रक्षा अध्ययन विभाग, ज्योतिबा फुले राजकीय महाविद्यालय रादौर यमुनानगर हरियाणा

सारांश

भारत आज विश्व के प्रमुख रक्षा शक्तियों में तेजी से उभर रहा है आधुनिक तकनीक स्वदेशी निर्माण क्षमता और रणनीतिक दृष्टि के कारण भारत का रक्षा कद लगातार मजबूत होता जा रहा है आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत देश रक्षा उपकरणों मिसाइल प्रणालियों, लड़ाकू विमान युद्ध और अत्याधुनिक तकनीक के उत्पादन में आत्मनिर्भर बनने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है इसके साथ ही भारत वैश्विक स्तर पर एक जिम्मेदार सुरक्षा साझेदारी के रूप में उभर रहा है जो संयुक्त सैन्य अभ्यासों शांति मिशनों और रणनीतिक सहयोग के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा में सक्रिय योगदान देता है। मजबूत सैन्य शक्ति, उन्नत अनुसंधान तथा बढ़ाते रक्षा निर्यात के कारण भारत का स्थान विश्व रक्षा परिदृश्य में पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। अब भारत रक्षा उत्पादों का निर्यात करने वाला प्रमुख देश बन गया है जिसका लक्ष्य 2029 तक रक्षा उत्पादन को 3 लाख करोड रुपए तक पहुंचना है। आत्मनिर्भरता ने राष्ट्रीय सुरक्षा और आत्मविश्वास में वृद्धि की है क्योंकि अब देश की सेना को स्थानीय स्तर पर निर्मित अस्त्रों और उपकरणों का भरोसा मिलता है।

मुख्य शब्द: आत्मनिर्भरता, स्वावलंबी भारत, स्वदेशी ।

परिचय:

आत्मनिर्भर भारत, भारत सरकार द्वारा प्रारंभ की गई एक महत्वपूर्ण पहल है जिसका उद्देश्य देश को विभिन्न क्षेत्रों में स्वावलंबी बनाना है। रक्षा क्षेत्र इस अभियान का महत्वपूर्ण भाग है क्योंकि किसी भी देश की सुरक्षा और सामरिक क्षमता उसके रक्षा उत्पादन पर निर्भर करती है। रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत का मुख्य लक्ष्य यह है कि भारत विदेशी आयात पर निर्भर रहने की बजाय आधुनिक हथियार, उपकरण, तकनीक और सैन्य प्रणालियों स्वयं विकसित और निर्मित कर सके। इसके लिए भारत ने कई सुधार नीतियां और

@2026 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2026, Vol. 05, Issue 03, 39-48
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7943

योजनाएं लागू की है ताकि भारत में रक्षा व सुरक्षा नीतियों को मजबूत बनाया जा सके और आने वाले समय में भारत रक्षा क्षेत्र में स्वावलंबी बन सके। काफी लंबे समय से भारत अपने पड़ोसी देशो से हथियार आयात करता था फिर ऐसा क्या हुआ कि भारत ने स्वयं रक्षा तथा हथियारों के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने का निश्चय किया इसके कुछ प्रमुख कारण रहे।

आयात पर भारी निर्भरता:

आज से कुछ दशकों पहले भारत अपनी जरूरत का अधिकांश हिस्सा बंदूकों से लेकर लड़ाकू विमान तोप टैंक आदि विदेश से ही आयात करता था यह आयती निर्भरता रणनीतिक रूप से असुरक्षा पैदा करती थी अगर किसी वैश्विक तनाव युद्ध या राजनीतिक विवाद में विदेश ने सप्लाई रोक दी तो भारत की रक्षा तैयारी प्रभावित हो सकती थी।

आपूर्ति में देरी अनियमितता और अप्रत्याशितता:

आयातित हथियार उपकरण और पुर्जे मिलने में देरी या अनिश्चित होती थी जिससे सेना की तैनाती या आधुनिकीकरण योजनाओं मे व्यवधान आता था। आवश्यकता के समय विदेशी आपूर्ति पर निर्भर रहना, समय पर सही सामान न मिलाना, या लागत बढ़ जाना यह सब जोखिम थे।

रणनीतिक स्वायत्तता की जरूरत:

रक्षा उपकरण, तकनीक और प्रणालिया अगर विदेश पर निर्भर हो, तो किसी भी प्रकार के भू राजनीतिक दबाव, प्रतिबन्ध या निर्यात रोक के समय देश की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। आत्मनिर्भर बनने से भारत अपने रक्षा निर्णय खुद ले सकता है, और अपनी सुरक्षा जरूरतो के अनुसार चीजे बना सकता हैं। साथ ही युद्ध स्थिति या आपातकाल में तुरंत और विश्वसनीय आपूर्ति सुनिश्चित होती है। समय पर रक्षा सुनिश्चित करना आत्मनिर्भरता का बड़ा फायदा है।

आधुनिकीकरण नई तकनीक और तेज बदलावों के लिए तत्परता:

आज के युद्ध में रक्षा मॉडल सिर्फ हथियारों तक सीमित नहीं इसमें रडार, सेंसर, इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम, साइबर सुरक्षा, ड्रोन आदि भी शामिल है। इन आधुनिक और संवेदनशील तकनीक में तेजी से विकास होता रहता है। यदि हम विदेशों पर निर्भर रहे तो नई तकनीक के लिए इंतजार करना पड़ेगा या देरी बनी रहेगी। आत्मनिर्भरता से भारत अपनी जरूरत के अनुसार नए वास्तु विकास में तेजी ला सकता है। इसके अलावा स्वदेशी, निजी क्षेत्र, स्टार्ट-अप और एमएसएमई को शामिल कर भारत रक्षा अभिनवता की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

@2026 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2026, Vol. 05, Issue 03, 39-48
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7943

आर्थिक एवं औद्योगिक लाभ

आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था:

आयात बंद करके भारत में रक्षा उत्पादन बढ़ाकर यह पैसा देश के अंदर ही रह जाता है इससे रोजगार, औद्योगिक विकास, नई तकनीको पर निवेश और आम अर्थव्यवस्था मजबूत होती है। साथ ही भारत अब विदेशों को रक्षा उपकरण/ सिस्टम निर्यात भी करने लगा है जिससे उसे राजस्व भी मिलता है और उसका रक्षा उद्योग वैश्विक मंच पर प्रतिस्पर्धी बनता जा रहा है।

अध्ययन के उद्देश्य

i. 2014–15 से 2024–25 तक भारत के स्वदेशी रक्षा उत्पादन की वृद्धि का विश्लेषण करना।
ii. रक्षा निर्यात पर नीतिगत सुधारों के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
iii. सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के योगदान का तुलनात्मक अध्ययन करना।
iv. आत्मनिर्भर भारत पहल की उपलब्धियों एवं सीमाओं का विश्लेषण करना।

शोध अंतराल एवं परिकल्पना

शोध अंतराल

अधिकांश पूर्ववर्ती अध्ययन आत्मनिर्भर भारत पहल के अंतर्गत रक्षा क्षेत्र में किए गए नीतिगत सुधारों और उनके गुणात्मक प्रभावों के विश्लेषण तक सीमित रहे हैं। हालांकि, सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के योगदान का तुलनात्मक तथा सांख्यिकीय (quantitative) विश्लेषण अपेक्षाकृत कम किया गया है।

परिकल्पना

आत्मनिर्भर भारत पहल के लागू होने के परिणामस्वरूप भारत के रक्षा उत्पादन एवं निर्यात में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। इस पहल के कारण देश में रक्षा उत्पादन में स्पष्ट रूप से बढ़ोतरी हुई है। भारत का रक्षा निर्यात पहले की तुलना में अधिक हुआ है और नए अंतरराष्ट्रीय बाजार भी विकसित हुए हैं। सार्वजनिक (सरकारी) और निजी (प्राइवेट) दोनों क्षेत्रों की भागीदारी और योगदान में वृद्धि हुई है। रक्षा क्षेत्र में स्वदेशीकरण (indigenization) को बढ़ावा मिला है, जिससे आयात पर निर्भरता कम हुई है।

साहित्य समीक्षा

रक्षा अर्थशास्त्र से संबंधित विभिन्न अध्ययनों में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि स्वदेशी रक्षा उत्पादन न केवल राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ करता है, बल्कि

@2026 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2026, Vol. 05, Issue 03, 39-48
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7943

आर्थिक विकास, तकनीकी नवाचार और औद्योगिक विस्तार को भी प्रोत्साहित करता है। कई शोधों में निजी क्षेत्र की भागीदारी, अनुसंधान एवं विकास (R&D) तथा नीति सुधारों को रक्षा क्षेत्र के विकास के प्रमुख कारक के रूप में चिन्हित किया गया है।

अध्ययन का प्रकार:

वर्णनात्मक डेटा

वर्णनात्मक पद्धति के अंतर्गत 2014–2025 के बीच रक्षा उत्पादन, बजट एवं निर्यात के आँकड़ों का अध्ययन किया गया। यह भाग तथ्यों, आँकड़ों और रुझानों को बताता है—"क्या हुआ?"

(A) रक्षा उत्पादन (Defence Production)

- 2014–15: 46,429 करोड़
- 2023–24: 1,27,434 करोड़
- 2024–25: 1.54 लाख करोड़ (रिकॉर्ड)

लगभग 174% वृद्धि

(B) रक्षा निर्यात (Defence Exports)

1. 2013–14: 686 करोड़
2. 2024–25: 23,622 करोड़

लगभग 34 गुना वृद्धि

3. 2025–26 (हालिया अनुमान): 38,424 करोड़

तेज़ी से बढ़ता वैश्विक निर्यात

(C) रक्षा बजट

- 2013–14: 2.53 लाख करोड़
- 2025–26: 6.81 लाख करोड़

क्षमता निर्माण पर बड़ा निवेश

(D) औद्योगिक भागीदारी

- 16,000+ MSMEs रक्षा क्षेत्र से जुड़े
- 462 कंपनियों को 788 लाइसेंस
- Private sector का योगदान: 23%

(E) वैश्विक पहुँच

1. भारत अब 100+ देशों को रक्षा निर्यात करता है

विश्लेषणात्मक डेटा

विश्लेषणात्मक पद्धति के अंतर्गत आत्मनिर्भर भारत पहल के प्रभाव, नीतिगत बदलाव एवं आयात से निर्यात की दिशा में हुए परिवर्तन का विश्लेषण किया गया।यह भाग "क्यों और कैसे हुआ" पर फोकस करता है।

(A) आयात से निर्यात तक बदलाव के कारण

1. नीति सुधार (Policy Reforms)

➢ Defence Acquisition Procedure (DAP) 2020

➢ Defence Procurement Manual 2025

"Buy Indian" को प्राथमिकता

2. आत्मनिर्भर भारत + मेक इन इंडिया

➢ Import substitution पर जोर

@2026 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2026, Vol. 05, Issue 03, 39-48
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7943

➢ Indigenous technology (DRDO, HAL, आदि)

विदेशी निर्भरता में कमी

3. निजी क्षेत्र की भागीदारी

- Tata, L&T, Bharat Forge जैसी कंपनियाँ
- Startups और MSMEs का बढ़ता रोल

innovation + cost efficiency

4. FDI और Ease of Doing Business

- रक्षा क्षेत्र में FDI सीमा बढ़ी

विदेशी तकनीक + घरेलू उत्पादन

5. Defence Corridors

- उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु
- regional manufacturing hubs

Data Sources (द्वितीयक स्रोत):

इस अध्ययन के लिए मुख्य रूप से द्वितीयक (Secondary) डेटा का उपयोग किया गया है। यह डेटा विभिन्न सरकारी एवं विश्वसनीय संस्थानों से संकलित किया गया है। प्रमुख स्रोत निम्नलिखित हैं:

1. **Ministry of Defence (रक्षा मंत्रालय)** की वार्षिक रिपोर्ट (2014–2025), जिनसे रक्षा उत्पादन, बजट एवं नीतिगत जानकारी प्राप्त की गई।

2. **Press Information Bureau (PIB)** की आधिकारिक प्रेस विज्ञप्तियों का उपयोग नवीनतम आँकड़ों एवं सरकारी घोषणाओं के विश्लेषण हेतु किया गया।

3. **Economic Survey of India (आर्थिक सर्वेक्षण)** से रक्षा क्षेत्र के आर्थिक प्रभाव एवं व्यापक विश्लेषणात्मक जानकारी प्राप्त की गई।

4. **India Brand Equity Foundation (IBEF)** की रिपोर्ट्स से रक्षा निर्यात एवं औद्योगिक विकास से संबंधित आँकड़े लिए गए।

5. **Defence Research and Development Organisation (DRDO)** एवं अन्य रक्षा सार्वजनिक उपक्रमों (DPSUs) की रिपोर्ट्स से स्वदेशी तकनीक एवं अनुसंधान से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई।

6. **संसद की स्थायी समिति** (Defence Standing Committee) की रिपोर्ट्स का उपयोग नीति विश्लेषण के लिए किया गया।

आर्थिक एवं रणनीतिक दृष्टिकोण से आत्मनिर्भर होना क्यों जरूरी था:

रक्षा क्षेत्र एक ऐसा क्षेत्र है जहां विदेशों पर निर्भर रहने से रणनीतिक स्वायत्तता खतरे में आ जाती है समय-समय पर बदलती भू राजनीतिक स्थितियां, संकटकाल, वैश्विक दबाव यह सब मिलकर भारत की सुरक्षा को अस्थिर कर सकते हैं आधुनिक युद्ध में रक्षा व्यवस्था में तेजी तकनीकी सुधार और

@2026 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2026, Vol. 05, Issue 03, 39-48
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7943

बदलाव जरूरी है इन सबके लिए निरंतर, भरोसेमंद और नियंत्रित आपूर्ति चाहिए और यह तभी संभव हो सकता है जब भारत इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर बने। आर्थिक विकास, आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था और रोजगार सृजन रक्षा क्षेत्र की घरेलू उत्पादन क्षमता से पूरा हो सकता हैं भारत की रक्षा उत्पादन परियोजनाओ में कई सफल केस स्टडीज है जिन्होंने देश की आत्म निर्भरता को बढ़ावा दिया है इसके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं

1 **अर्जुन टैंक:** अर्जुन टैंक भारत का स्वदेशी रूप से विकसित मुख्य युद्ध टैंक है जिसे डीआरडीओ और अन्य संस्थाओं ने विकसित किया है । इसकी उच्च गतिशीलता, शक्तिशाली तोप और उन्नत सुरक्षा व्यवस्था ने भारतीय सेना की युद्ध क्षमता को मजबूत किया है ।

2 **अग्नि मसाइल श्रृंखला:** अग्नि मिसाइल श्रृंखला भारत की रणनीतिक मिसाइल है जिसे डीआरडीओ ने विकसित किया है। इसकी विभिन्न रेंज ने भारत को क्षेत्रिय और वैश्वीक स्तर पर रणनीति शक्ति प्रदान की है।

3 **तेजस लड़ाकू विमान:** तेजस भारत का स्वदेशी लड़ाकू विमान है जिसे हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड ने विकसित किया है। इसकी उन्नत तकनीक और लड़ाकू क्षमता ने भारतीय वायु सेना की ताकत बढ़ाई है।

4 **निर्भय क्रूज मिसाइल:** निर्भय भारत की पहली स्वदेशी क्रूज मिसाइल है, जिसे डीआरडीओ ने विकसित किया है। इसकी लंबी दूरी और उच्च सटीकता ने भारत की रणनीतिक मिसाइल क्षमता को बढ़ावा दिया है।

5 **ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल:** ब्रह्मोस भारत और रूस के संयुक्त उपक्रम से विकसित सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है। यह दुनिया की सबसे तेज क्रूज मिसाइल में से एक है और भारतीय सेना, नौसेना और वायु सेना के लिए एक महत्वपूर्ण हथियार है।

इन परियोजनाओं ने भारत के रक्षा उद्योग को सफल एवं विकसित बनाया है जिससे विश्व का भारत पर भरोसा पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है पिछले दशकों के कुछ आंकड़े बताते हैं कि भारत ने रक्षा उत्पादन निर्यात में प्रगति की है यानी स्वनिर्भरता की दिशा में भारत आगे बढ़ चुका है। वित्तीय वर्ष 2023-24 में भारत का कुल रक्षा उत्पादन 1.27 लाख करोड़ रहा जो 2014-15 की तुलना में 174% अधिक है। वित्तीय वर्ष 24-25 में रक्षा उत्पादन में एक नया रिकॉर्ड बनाया 1,50,590 करोड़ यह 2023-24 से लगभग 18% अधिक है। वर्ष 2019-20 में रक्षा उत्पादन 79071 करोड़ था 2024 25 में यह आंकड़ा 90% बढ़ चुका है।

@2026 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2026, Vol. 05, Issue 03, 39-48
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7943

रक्षा निर्यात में भी जबरदस्त बढ़ोतरी हुई है।

वित्तीय वर्ष 2013-14 रक्षा निर्यात केवल 686 करोड़ था जबकि वित्तीय वर्ष 2024-25 में यह 23622 करोड़ पर पहुंच गया। यानी पिछले लगभग एक दशक में निर्यात में 35 गुणा वृद्धि हुई।

उत्पादन में निर्यात में सार्वजनिक क्षेत्र के साथ साथ निजी क्षेत्र की भगीदारी भी बढ़ी है। वित्तीय वर्ष 2024-25 में कुल उत्पादन में लगभग 77% हिस्सा सार्वजनिक क्षेत्र का था और निजी क्षेत्र का लगभग 23 % ।इसी बीच निर्यात में निजी कंपनी का योगदान भी अहम रहा। इसके अतिरिक्त भारत सरकार ने कई हथियार, सिस्टम और पुर्जों के आयात पर रोक लगाई है ताकि इनका उत्पादन भारत में ही किया जा सके ।भारत सरकार ने 2029 तक भारत का रक्षा उत्पादन 3 लाख करोड़ और रक्षा निर्यात 50000 हजार करोड़ तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा है।

इन आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि भारत अब आयात निर्भर देश से निर्माता एवं निर्यात करता देश की दिशा में तेजी से बदल रहा है। निर्यात में बढ़ोतरी का मतलब है भारत अब ना सिर्फ अपनी रक्षा जरूरत को पूरा कर रहा है बल्कि अन्य देशों को हथियार भी बेच रहा है। इससे अंतरराष्ट्रीय रक्षा बाजार में भारत की भूमिका का विस्तार हो रहा है सार्वजनिक तथा निजी सेक्टर की भागीदारी से रक्षा उद्योग में विवधता ,प्रतिस्पर्धा और नवाचार आता है जिससे गुणवत्ता, लागत ओर बेहतर होती है।

क्षेत्रीय योगदान:

सार्वजनिक क्षेत्र: 77%

निजी क्षेत्र: 23%

आयात बनाम स्वदेशी खरीद (सरल तालिका)

वर्ष	आयात (%)	स्वदेशी उत्पादन (%)
2014	65–70%	30–35%
2020	50–55%	45–50%
2025	35–40%	60–65%

निष्कर्ष: भारत धीरे-धीरे **import dependent से self-reliant** बन रहा है।

परिणाम एवं निष्कर्ष

भारत को रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की आवश्यकता इसलिए पड़ी क्योंकि आयात पर निर्भर रहने से रणनीतिक असुरक्षा, आपूर्ति विलंब, तकनीकी पिछड़ापन और आर्थिक अवसर खोने का खतरा था। आत्मनिर्भरता से न सिर्फ रक्षा

@2026 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2026, Vol. 05, Issue 03, 39-48
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7943

सवायत्तता सुनिश्चित होती है बल्कि भारत ने आधुनिक, भरोसेमंद, सामरिक व आर्थिक रूप से सुदृढ़ रक्षा उद्योग का आधार भी बनाना शुरू किया।

आत्मनिर्भर बनकर भारत अपनी ज़रूरतों के अनुसार हथियार, गोला-बारूद, मिसाइल, लड़ाकू विमान और आधुनिक तकनीक स्वयं विकसित कर सकता है, जिससे युद्धक क्षमता मजबूत होती है और निर्णय लेने में पूरी स्वतंत्रता मिलती है। इसके अलावा, रक्षा आयात पर होने वाला भारी खर्च कम होगा और विदेशी मुद्रा की बचत होगी, जिसे देश के विकास में लगाया जा सकता है। स्वदेशी उत्पादन से देश में रोजगार बढ़ेगा, उद्योग और तकनीक का विकास होगा तथा युवा वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को नवाचार के अधिक अवसर मिलेंगे। साथ ही, आत्मनिर्भर रक्षा उद्योग भारत को हथियार निर्यातक देश बनने का अवसर देता है, जिससे वैश्विक स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा बढ़ती है और आर्थिक लाभ भी मिलता है। कुल मिलाकर, रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता भारत को सुरक्षित, सक्षम, आर्थिक रूप से मजबूत और वैश्विक स्तर पर अधिक प्रभावशाली बनाती है।

2023–24 में रक्षा उत्पादन: 1.27 लाख करोड़ (2014–15 की तुलना में 174% वृद्धि)

2024–25 में उत्पादन: 1,50,590 करोड़ (18% वृद्धि)

2019–20 से 2024–25 तक लगभग 90% वृद्धि

रक्षा निर्यात: 686 करोड़ (2013–14) से बढ़कर 23,622 करोड़ (2024–25)

लगभग 35 गुना वृद्धि

उन्नत तकनीकों (AI, ड्रोन, साइबर सुरक्षा) में निवेश

सार्वजनिक-निजी साझेदारी को प्रोत्साहन

संदर्भ

1. The Economic Times. (n.d.). *How India's Make in India push is reshaping its military arsenal*. https://economictimes.indiatimes.com/news/defence/india-independence-day-august-1-from-imported-guns-to-desi-jets-india-defence-industry-journey-make-in-india-push-military-arsenal/articleshow/123255749.cms?from=mdr
2. Dhyeya IAS. (n.d.). *भारत की रक्षा आधुनिकीकरण और आत्मनिर्भरता: रणनीतिक सुधार और स्वदेशीकरण* [India's defense modernization and self-reliance: Strategic reforms and indigenization]. https://www.dhyeyaias.com/hi/current-

@2026 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2026, Vol. 05, Issue 03, 39-48
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7943

affairs/daily-current-affairs/india-defence-transformation-self-reliance

3. KPMG. (2025, May). *Atmanirbhar, Agrani: India's defence industrial sector vision 2047*. https://kpmg.com/content/dam/kpmgsites/in/pdf/2025/05/indias-defence-industrial-sector-vision-2047.pdf
4. ETGovernment. (n.d.). *Transforming India's defence sector: Atmanirbharta revolution*. The Economic Times. https://government.economictimes.indiatimes.com/news/defence/transforming-indias-defence-sector-atmanirbharta-revolution/125475414
5. Bharat Shakti. (n.d.). *India's Atmanirbharta in defence sector: Embracing indigenous technologies and growth in exports*. https://bharatshakti.in/indias-atmanirbharta-in-defence-sector-embracing-indigenous-technologies-and-growth-in-exports/
6. Insights on India. (2025, November 21). *Why India still remains a major arms importer: Obstacles to defence self-reliance explained*. https://www.insightsonindia.com/2025/11/21/defence-atmanirbharta-record-production-and-exports/
7. *The Economic Times*.
8. *India Today*.
9. India Brand Equity Foundation.
10. Ministry of Defence. (2024). *Annual report 2023–24*. Government of India.
11. India Brand Equity Foundation. (2023). *Indian defence industry report*.
12. KPMG. (2025). *India's defence industrial sector vision 2047*.
13. Economic Times. (2024). *How India's Make in India push is reshaping its military arsenal*.
14. Dhyeya IAS. (2024). *भारत की रक्षा आधुनिकीकरण और आत्मनिर्भरता* [India's defense modernization and self-reliance].
15. Ministry of Defence. (2025). *Annual reports (2014–2025)*. Government of India.
16. Press Information Bureau. (n.d.). *Press releases on defence sector*. Government of India.
17. Ministry of Finance. (n.d.). *Economic survey of India: Various issues*. Government of India.
18. India Brand Equity Foundation. (n.d.). *Defence industry reports*.

@2026 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2026, Vol. 05, Issue 03, 39-48
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7943

19. Defence Research and Development Organisation. (n.d.). *Annual reports*. Government of India.

Received: Jan 06, 2026
Accepted: Apr 22, 2026
Published: July 01, 2026

India's Transition from Importer to Exporter in the Defense Sector: An Analytical Study of the Atmanirbhar Bharat Initiative (2014–2025), authored by Dr. Rinku, is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-NoDerivatives 4.0 International License (CC BY-NC-ND 4.0) Published by ICERT.